MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

VIDYAWARTA®

Issue-36, Vol-16 Oct to Dec 2020
Peer Reviewed International Referred Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

Scanned with CamScanner

28] महिला सशक्तिकरण एवं महिला अधिकार संरक्षण – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन
डॉ.शांति कुमारी, सहरसा(बिहार) ||162

29] महिलाओं पर होने वाले उत्पीड़न के कारण उनके मनोवैज्ञानिक कल्याण का अध्ययन
डॉ. प्रदीप कुमार सिंह, सुल्तान ||170

30] जनपद सिद्धार्थनगर के संरचनात्मक भू स्वरूप का भौगोलिक अध्ययन
डॉ. सुलभि सौरभ ||173

31] कबीरदास का समाज–दर्शन
डॉ. भवानी प्रधान, राजनांदगांव (छ.ग.) ||177

32] आधुनिक भारत में दलितों की राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति
डॉ चन्दा कुमारी, अन्नपट्टी, बिहार ||180

33] योगदर्शन में ईश्वर का स्वरूप
डॉ. गौतम कुमार ||185

34] राग की उत्पत्ति एवं विकास
कनक मणि ||188

35] समकालीन हिंदी कविता में चित्रित सामाजिक समस्याएं
संतोष भागरे, गेवराई जि.बीड ||190

36] महात्मा गाँधी का सर्वोदय दर्शन और सामाजिक न्याय
डॉ० अशोक कुमार शाही, दुबौली, गोरखपुर (उ०प्र०) ||192

37] प्राचीन काल में दास व्यवस्था का एक अध्ययन
मौसमी कुमारी,पूर्णियाँ ||194

38] कला के क्षेत्र में बसोहली कलम का योगदान
स्नेहलता चित्रकला संकाय, नैनीताल ||199

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

35

समकालीन हिंदी कविता में चित्रित सामाजिक समस्याएँ

संतोष भागरे
सहा.प्रा.-हिन्दी विभाग
र.भ. अट्टल महाविद्यालय, गेवराई जि.बीड

****

समकालीन हिंदी कविता में समसामयिक परिवेश अपनी बहुविध विसंगतियों के साथ प्रतिबिम्बित हुआ है। 1960 के पश्चात स्वतंत्रता से हुआ मोहभंग, राजनीति में पनपता भाई-भतीजावाद, अवसरवादिता, आर्थिक-सामाजिक विषमता, धार्मिक उन्माद, साम्प्रदायिकता, भाषावाद, क्षेत्रीयता, जातियता, भ्रष्टाचार, महँगाई, बेरोजगारी, किसानों की आत्महत्याएँ, आतंकवाद, प्राकृतिक संसाधनों की अमर्याद लूट, बढ़ते शहरीकरण से नष्ट -भ्रष्ट होता पर्यावरण, मुक्त अर्थव्यवस्था के पश्चात फली-फूली विश्व बाजार संस्कृति, मीडिया का आतंक और मानवीय मूल्यों के पतन से अनेक सामाजिक समस्याएँ उत्पन्न हुई। सामाजिक स्वास्थ्य बनाए रखने के लिए समकालीन हिंदी कवियों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामाजिक समस्याओं के विरुध्द आवाज उठायी है। डॉ. संतोषकुमार तिवारी इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं, - "समकालीन कविता आदमी की स्वाभिमान भरी आजाद चेतना को संयत स्वर में उकसाने वाली कविता है।"1

15 अगस्त, 1947 को देश स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता के पश्चात जनप्रतिनिधियों ने जनहीतों की उपेक्षा कर आत्महित की ओर विशेष ध्यान दिया। स्वतंत्रता के पश्चात बढ़ता भ्रष्टाचार का काला साम्राज्य, भाई-भतीजावाद, अवसरवादिता, परिवारवाद इसका सूचक है। विविधता में एकता इस देश की सबसे बड़ी ताकद है। चुनाव के समय धर्म, साम्प्रदायिकता, जाति, प्रांत, भाषा के आधार पर की जानेवाली राजनीति इस देश की एकता एवं अखंडता के लिए सबसे बड़ा खतरा है। आये दिन घटित होते विवाद इसके प्रमाण हैं। इसे धर्म और आग, बच्चे और फूल के माध्यम से अधोरेखित कर पंकज राग 'बता दो' कविता में कहते हैं,-

"धर्म का बहकना / बच्चों का चहकना
आग का दहकना / फूलों का महकना
मुझे बता दो इनमें से कौन क्रिया है, कौन प्रतिक्रया?"2

भारत कृषिप्रधान देश है जो गाँवो में बसता है। स्वतंत्रता के पश्चात अंग्रेजों के उत्तराधिकारियों द्वारा कृषिव्यवस्था की उपेक्षा कर औद्योगिकरण की ओर कदम बढ़ाने से इस कृषिप्रधान देश की दुर्दशा आरम्भ हुई। वैश्वीकरण की मुक्त बाजारव्यवस्था ने उसे सर्वाधिक आहत किया। भरत प्रसाद इस संदर्भ में कहते है, - " इस भूमंडलीय और आर्थिक उदारीकरण का सबसे घातक पहलू कृषि सभ्यता का संकटग्रस्त हो जाना है।"3 सरकारी योजनाओं की असफलता, भ्रष्टाचार, कर्ज और प्राकृतिक आपदाओं के चलते किसान आत्महत्या करने के लिए विवश है। धूमिल किसान जीवन की दुर्दशा को लेकर 'हरितक्रांति' कविता के माध्यम से सीधा सवाल करते हैं,-"इतनी हरियाली के बावजूद / अर्जुन को नहीं मालूम

उसके गालों की हड्डी / क्यों उभर आयी है?
उसके बाल सफेद क्यों हो गये है
लोहे की छोटी - सी दुकान में बैठा आदमी सोना
और इतने बड़े खेत में खड़ा आदमी
मिट्टी क्यों हो गया है?"4

औद्योगिकरण तथा वैश्वीकरण के पश्चात महानगरीय सभ्यता एवं संस्कृति फलने-फूलने लगी। महानगरों की चकाचौंध संस्कृति में मूल्य कौमत में तब्दील हो जाने से प्रेम, विश्वास, अपनापन, संवेदना, शांति, मानवता जैसे मानवीय मूल्यों का अकाल पड़ गया। 'यूज एंड थ्रो' की संकीर्ण मानसिकता ने महानगरीय सभ्यता एवं संस्कृति को 'साँप' से भी अधिक विषैली बना दिया। महानगरों की भूलभूलैया संस्कृति में आज का मनुष्य दिशाहीन होकर भटक रहा है। बड़े शहरों की बढ़ती रंगीनियाँ, दुनियावी भीड़ के बीच क्षण-क्षण मरते शहर के 'जमीर' से चिंतित कुसुम अंसल 'मैंने तो कहा था' कविता में कहती हैं,-"मैंने तो कहा था / अपनापन ... अपने लोग

पुरानी बातें हैं / आज तो सारे के सारे तथ्य
मूल्यहीन हैं .../ प्रदूषित प्रकृति ...
वर्षा के मैले आँसू / बीन्ध पटे रास्तों का
विध्वंसक सफर / दुर्घटनाएँ ...
टुकड़े - टुकड़े मानवीयता / बस यही ...
आज का सच है।"5

स्वतंत्रता के पश्चात गरीब और अमीर के बीच की दूरी निरंतर बढ़ती जा रही है। निर्मला पुतुल जी ने 'आखिर कब तक' कविता के माध्यम से आम - आदमी के खून पसीने से अपने साम्राज्य की दीवारें खड़ी कर मनोल्लाट सींचनेवाले शोषकों की अमानवीयता की पोल खोली है। विकास के नाम पर किये जा रहे विनाश, भूख, शोषण, उत्पीड़न, अन्याय, अत्याचार को चुपचाप सहते आ रहे आम आदमी की विवशता एवं बेबसी को लेकर निर्मला पुतुल सीधा सवाल करती है, -"हमारे लाशों की ईंट गारे से

ऊँची करते रहेंगे घर की दीवारें

Scanned with CamScanner

पेठकनखाना और लॉन पर रखे कलात्मक गमलों में
सींचते उगाते रहेंगे हमारे खून - पसीने से मनीप्लांट
आखिर कब तक ? और कब तक?"6

बच्चे देश का भविष्य होते है। हमारे देश में बाल मजदूरी कानूनन अपराध होते हुए भी उसका उल्लंघन किया जाता है। बाल मजदूरी इस देश के अंधकारमय भविष्य की ओर संकेत है। जाग रहे और सोने चले गये बच्चों के माध्यम से 'भारत' और 'इंडिया' के बीच की दूरी को अधोरेखित कर प्रयाग शुक्ल कहते है, -

"सोने चले गये बच्चे / क्रिकेट खेलने वाले
चलाने वाले तिपहिया सायकिल / सोने चले गये
जाग रहे हैं बच्चे / तश्तरियाँ -प्लेटें साफ करते
ढोते सामान / जाग रहे हैं ।"7

शिक्षा समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। दुर्भाग्य से वैश्वीकरण के इस दौर में दिनों - दिन महँगी होती जा रही शिक्षा से आम -आदमी दूर होते जा रहा है। 'एक माँ का अपराध' कविता में अपनी बेटी के उज्ज्वल भविष्य के लिए शिक्षा का उचित प्रबंध न कर पाने की पीड़ा है। जो हमारी अंतरात्मा को झकझोरती है। निर्मला पुतुल कहती है, -" मेरी बच्ची !

बहुत कुछ करना चाहकर भी /
कुछ कर नहीं पाए हम तुम्हारे लिए
मेरे बटुआ का वजन /
इतना हल्का है कि उससे केवल दो शाम की
रोटी ही जुगाड़ हो सकती है बड़ी मुश्किल से
उन ऊँचे अट्टालिकाएँ वाली / स्कूल के सामने मेरा बटुआ
महज मुट्ठी में छिपाने भर है / तुम क्या जानो?"8

प्रकृति के साथ मनुष्य का अभिन्न रिश्ता है। ताजगी भरी सुबह जब प्रकृति प्रेम नीलेश रघुवंशी के भीतर हिलोरे मारने लगता है तब वह खिड़की के बाहर देखना चाहती है - मुँडेर पर अनगिन चिड़ियाँ, झुंड में उड़ते सफेद बगुले, पेड़ की डाल पर नीलकंठ तथा झूमते पेड़ पर कूकती कोयल। पर दुर्भाग्य से खिड़की खुलने के बाद अनगिनत समस्याओं की दलदल में फँसे देश की विपन्नावस्था को देखकर वह निशब्द हो जाती है। नीलेश रघुवंशी 'खिड़की खुलने के बाद' कविता में कहती हैं, -"खोलती हूँ जैसे ही खिड़की दिखते हैं

सड़क पर शौच करते लोग
कीचड़ में भैंसों संग खेलते बच्चे
बिना टोंटी वाले सूखे सरकारी नल
टूटे-फूटे तपेले में अपना मुँह गड़ाये
एक दूसरे पर गुर्राते कुत्ते
दिखता है कूड़े और नालियों पर बसर करता
सड़ांध मारता जीवन
देखना कुछ चाहती हूँ
दिख कुछ और जाता है
खिड़की खुलने के बाद ... ।"9

मनुष्य सामाजिक प्राणी है साथ ही वह विचारशील भी है। विचार और अभिव्यक्ति मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। जिसकी कमी के कारण सामाजिक स्वास्थ्य बिगड़ रहा है। हरिशंकर परसाई ठीक ही कहते है, - "सोचना एक रोग है जो इस रोग से मुक्त हैं और स्वस्थ हैं, वे धन्य है।"10 समाजीकरण के अभाव में समाज से कटे, अपनी ही दुनिया में व्यस्त एवं मस्त, आत्मकेंद्रित, सुविधाभोगी, घुट-घुटकर गुमनाम - सी जिन्दगी जीने वाले मध्यवर्ग की संकीर्ण मानसिकता पर प्रहार कर उदय प्रकाश कहते हैं,-

"आदमी / मरने के बाद / कुछ नहीं सोचता ।
आदमी / मरने के बाद / कुछ नहीं बोलता ।
कुछ नहीं सोचने / और कुछ नहीं बोलने पर
आदमी / मर जाता है।"11

सारांश :-

साहित्य समाज परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। अत : समाज जीवन में व्याप्त समस्या रुपी गंदगी को समकालीन हिंदी कवियों ने अपनी कविता रुपी झाड़ू के माध्यम से साफ कर स्वस्थ, सुंदर एवं खुशहाल समाज जीवन के लिए निरंतर आवाज उठायी है। समकालीन हिंदी कविता की यह निरंतर गतिशीलता उसकी सामाजिक प्रतिबध्दता की सूचक है। समकालीन सामाजिक समस्याओं के यथार्थ चित्रण के कारण ही समकालीन हिंदी कविता स्वातंत्र्योत्तर भारत कि समसामयिक स्थितियों की प्रामाणिक दस्तावेज है।

संदर्भ :- 1) डॉ.संतोषकुमार तिवारी, नये कवि : एक अध्ययन भाग 5, पृ.14
2) पंकज राग, यह भूमंडल की रात है, पृ.63
3) भरत प्रसाद, कविता की समकालीन संस्कृति, पृ.252
4) धूमिल, सुदामा पाण्डे का प्रजातंत्र, पृ.65
5) कुसुम अंसल, समय की निरंतरता में, पृ.100
6) निर्मला पुतुल, बेघर सपने, पृ.67
7) प्रयाग शुक्ल, यह जो हरा है, पृ.65
8) निर्मला पुतुल, बेघर सपने, पृ.100-101
9) www.kavitakosh.org date 07-09-2019 5.00 pm
10) संपा.निर्मला जैन, रेखा सेठी, निबन्धों की दुनिया: हरिशंकर परसाई, पृ.46
11) उदय प्रकाश : कवि ने कहा (चुनी हुई कविताएँ), पृ.40

Scanned with CamScanner